देव=हे देव; **रूपम्**=रूप; **प्रसीद**=प्रसन्न होइये; **देवेश**=हे देवेश; **जगन्निवास**=हे जगत् के आश्रय।

अनुवाद

हे नाथ! पहले न देखे हुए आपके इस अद्भुत विश्वरूप के दर्शन से मैं हर्षित हो रहा हूँ; पर मेरा चित्त भय से आकुल भी हो रहा है। इसलिए हे देवेश! हे जगन्निवास! मुझ पर प्रसन्न होकर अपने उसी चतुर्भुज रूप को फिर से प्रकट कीजिये।।४५।।

तात्पर्य

अतिशय प्रिय सखा के रूप में अर्जुन की श्रीकृष्ण से घनिष्ठ अंतरंगता है। एक सखा अपने प्रिय सखा के ऐश्वर्य को देखकर स्वभावतः अति हर्षित होता है। इसी भाँति, अर्जुन भी यह देखकर अतिशय प्रमुदित हो रहा है कि उसके प्राणाधिक प्रिय सखा श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं और इतना आश्चर्यमय विश्वरूप प्रकट कर सकते हैं। परन्तु साथ ही, विश्वरूप के दर्शन से उसे इस भय की भी अनुभूति हो रही है कि श्रीकृष्ण के लिए अपने विशुद्ध, अनन्य सख्यभाव में बहुत बार उनका अपराध कर बैठा है। इसलिए कोई युक्तिसंगत कारण न होने पर भी उसका चित्त भय से आकुल हो चला है। उसकी श्रीकृष्ण से प्रार्थना है कि वे उसे अपने चतुर्भुज नारायण रूप के दर्शन करायें। प्राकृत-जगत् के जैसे विश्वरूप भी प्राकृत और अनित्य है। परन्तु वैकुण्ठ लोकों में श्रीभगवान् चिन्मय नारायण रूप से नित्य विराजमान हैं। परव्योम में असंख्य वैकुण्ठ धाम हैं, जिनमें से प्रत्येक में श्रीकृष्ण अंशरूप से स्थित हैं। इन रूपों के विविध नाम हैं। अर्जुन वैकुण्ठ लोकों में प्रकट रहने वाले इन रूपों में से एक का दर्शन करना चाहता है। अवश्य ही प्रत्येक वैकुण्ठ में प्रकट नारायण रूप चतुर्भुज है। नारायण चारों भुजाओं में शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये रहते हैं। विविध नारायण रूप इन चारों उपकरणों को भिन्न-भिन्न भुजाओं में धारण करते हैं; इसी क्रम-भेद के अनुसार उनके भिन्न-भिन्न नाम हैं। ये सब श्रीकृष्ण के रूप हैं। इसलिए अर्जुन श्रीकृष्ण से वह चतुर्भुज रूप दिखाने की प्रार्थना करता है।

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त-
मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन
सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते।।४६।।

किरीटिनम्=मुकुट धारण किये हुए; **गदिनम्**=गदा; **चक्रहस्तम्**=हाथ में चक्र लिये हुए; **इच्छामि**=चाहता हूँ; **त्वाम्**=आपको; **द्रष्टुम्**=देखना; **अहम्**=मैं; **तथा एव**=वैसे ही; **तेन एव**=उसी; **रूपेण**=रूप से (युक्त); **चतुर्भुजेन**=चतुर्भुज; **सहस्रा-बाहो**=हे सहस्रबाहो; **भव**=होइये; **विश्वमूर्ते**=हे विश्वमूर्ति।

अनुवाद

हे विश्वमूर्ति! मैं आप को मुकुट धारण किये हुए तथा शंख, चक्र, गदा और पद्म से युक्त चतुर्भुज रूप में देखने को आतुर हूँ। इसलिए हे सहस्रबाहु! अपने उसी चतुर्भुज रूप को प्रकट कीजिए।।४६।।